माँ

डा. बलजीत सिंह*

मैं आज हो गयी हूँ बड़ी,
शुक्रिया करूँ मैं अपनी माँ का
जिसने मुझे है ये दुनिया दिखाई।

कहने को एक शब्द है माँ
पर है इसमें सारी सृष्टि समाई।

बचपन में ये लाड़ लड़ाए,
रूठने पर प्यार से मनाए,
गुस्सा करे कभी,
पर उसमें भी प्यार समाए।

कुदरत की एक अनमोल नेमत
अपने लिए जिए कम,
पर अपनों के लिए
हर मुश्किल में है साथ खड़ी।

जान गयी अब मैं सब क्योंकि
मैं आज हो गयी हूँ बड़ी
शुक्रिया करूँ मैं अपनी माँ का
जिसने मुझे है ये दुनिया दिखाई।

रिश्ते बहुत हैं दुनिया में
कुछ अपनों से, कुछ परायों से
कोई करे अहसान, कोई झूठ से मन बहलाए
पर माँ में हमेशा सच ही नजर आए।

गौर किया जब मैंने रिश्तों पर
तो लाइन थी बहुत बड़ी।
पर माँ और बेटी का रिश्ता
दिखा सबसे ऊपर,
इसमें ना कभी दरार आयी।

चर्चा करूँ मैं अब यहाँ
अपनी माँ की माँ का,
रिश्ते में जो मेरी नानी कहलाती,
गरमी की छुट्टियों में जब हम,
उनसे मिलने जाते,
प्यार भरे वे हाथ नानी के,
आज भी वो हैं याद आते।

विनती करूँ मैं एक भगवान से,
माँ मिले सबको मेरी माँ जैसी,
जो हर परेशानी में साथ है मेरे खड़ी,
बस अब मैं सब जान गयी हूँ,
क्योंकि मैं आज हो गयी हूँ बड़ी,
क्योंकि मैं आज हो गयी हूँ बड़ी!!

*****

* गुरूद्वारा श्री गुरूसिंह सभा, रमेश नगर, नई दिल्ली।